सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदे

छक्खण्डागमे

जीवट्ठाणं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइया टीका

धवला

केवलणाणुज्जोइयछद्दव्वमणिज्जियं पवाईहि।

णमिऊण जिणं भणिमो दव्वणिओगं गणियसारं ॥१॥

संपहि चोद्दसण्हं जीवसमासाणमत्थित्तमवगदाणं सिस्साणं तेसिं चेव परिमाण-पडिबोहणट्ठं भूदबलियाइरियो सुत्तमाह---

दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकाशित किया है और जो प्रवादियोंके द्वारा नहीं जीते जा सके ऐसे जिनेन्द्रदेवको मैं (वीरसेन आचार्य) नमस्कार करके गणितकी जिसमें मुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूँ ॥१॥

विशेषार्थ --- द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्रव्यप्रमाणानुगम या संख्याप्ररूपणा है। यद्यपि द्रव्य छह हैं फिर भी इस अधिकारमें गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंका आश्रय लेकर केवल जीवद्रव्यकी संख्याका ही प्ररूपण किया गया है।

जिन्होंने चौदहों गुणस्थानोंके अस्तित्वको जान लिया है ऐसे शिष्योंको अब उन्हीं चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके परिमाण (संख्या) के ज्ञान करानेके लिये भूदबलि आचार्य आगेका सूत्र कहते हैं---

द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेश निर्देश ॥१॥

द्रवति द्रोष्यति अदुद्रवत्पर्यायानिति द्रव्यम् । अथवा द्रूयते द्रोष्यते अद्रावि पर्याय इति द्रव्यम्। तं च दव्वं दुविहं, जीवदव्वं अजीवदव्वं चेदि। तत्थ जीवदव्वस्स लक्खणं वुच्चदे। तं जहा, ववगदपंचवण्णोववगदपंचरसो ववगददुगंधो ववगदअट्ठफासो सुहुमो अमुत्ती अगुरूगलहुओ असंखेज्जपदेसिओ अणिद्दिट्ठसंठाणो त्ति एदं जीवस्स साहारणलक्खणं। उड्ढगई भोत्ता सपरप्पगासओ त्ति जीवदव्वस्स असाहारणलक्खणं। उत्तं च--

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं१ (प्रवच.२,८०; पञ्चा १३४.) ।।१।।

जं तं अजीवदव्वं तं दुविहं, रू वि-अजीवदव्वं चेदि। तत्थ जं तं रूवि-अजीवदव्वं तस्स लक्खणं वुच्चदे-रू परसगन्धस्पर्शवन्तः पुद्गलाः२ ('स्पर्शरतगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः' तत्त्वार्थसू. ५,२३) रूपि

जो पर्यायोंको प्राप्त होता है, प्राप्त होगा और प्राप्त हुआ है उसे द्रव्य कहते हैं। अथवा, जिसके द्वारा पर्याय प्राप्त की जाती है, प्राप्त की जायेगी और प्राप्त की गई थी उसे द्रव्य कहते हैं। वह द्रव्य दो प्रकारका है, जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य। उनमेंसे जीवद्रव्यका लक्षण कहते हैं। वह इसप्रकार है,जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहीत है, सूक्ष्म है, अमूर्ति है, अगुरूलघु है, असंख्यातप्रदेशी है और जिसका कोई संस्थान अर्थात् आकार निर्दिष्ट नहीं है वह जीव है। यह जीवका साधारण लक्षण है। अर्थात् यह लक्षण जीवको छोडकर दूसरे धर्मादी अमूर्त द्रव्योंमे भी पाया जाता है, इसलिये इसे जीवका साधारण लक्षण कहा है। परंतु ऊर्ध्वगतिस्वभावत्व,भोक्तृत्व और स्वपरप्रकाशकत्व यह जीवका असाधारण लक्षण है अर्थात् यह लक्षण जीवद्रव्यको छोडकर दूसरे किसी भी द्रव्यमें नहीं पाया जाता है, इसलिये इसे जीवद्रव्यका असाधारण लक्षण कहा है। कहा भी है--

जो रसरहित है, रूपरहित है, गन्धरहित है, अव्यक्त अर्थात् स्पर्शगुणकी व्यक्तिसे रहित है, चेतनागुणयुक्त है, शब्दपर्यायसे रहित है, जिसका लिंगके द्वारा ग्रहण नहीं होता है और जिसका संस्थान अनिर्दिष्ट है अर्थात् सब संस्थानोंसे रहित जिसका स्वभाव है उसे जीवद्रव्य जानो ।।१।।

अजीवद्रव्य दो प्रकारका है, रूपी अजीवद्रव्य और अरूपी अजीवद्रव्य। उनमें जो रूपी अजीवद्रव्य है उसका लक्षण कहते हैं। रूप, रस, गन्ध और स्पर्शसे युक्त पुद्गल रूपी

अजीवद्रव्यं शब्दादि । तं च रूवि-अजीवदव्वं छव्विहं, पुढवि-जल-छाया चउरिंदिंय-विसय-कम्म-क्खंध-परमाणू चेदि। वुत्तं च ---

पुढवी जलं च छाया चउरिंदियविसय-कम्म-परमाणू।

छव्विहमेयं भणियं पोग्गलदव्वं जिणवरेहि१ (गो.जी.६०१.पुढवी जलं च छाया चउरिंदियकम्मपाओग्गा । कम्मातीदा एवं छब्भेया पोग्गला होंति ।। पञ्चा.८३.) ।।२।।

जं तं अरूवि-अजीवदव्वं तं चउव्विहं धम्मदव्वं अधम्मदव्वं आगासदव्वं कालदव्वं चेदि। तत्थ धम्मदव्वस्स लक्खणं वुच्चदे-ववगदपंचवण्णं ववगदपंचरसं ववगददुगंधं ववगदअट्ठपासं जीव-पोग्गलाणं गमणागमणकारणं असंखेज्जपदेसियं लोगपमाणं धम्मदव्वं। एवं चेव अधम्मदव्वं पि, णवरि जीव-पोग्गलाणं एदं ट्ठिदिहेदू। एवमागासदव्वं पि, णवरि आगासदव्वमणंतपदेसियं सव्वगयं ओगाहणलक्खणं। एवं चेव कालदव्वं पि, णवरि स-परपरिणामहेऊ अपदेसियं लोगपदेसपरिमाणं२ (लोगागासपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का। रयणाणं रासी इव ते कालाणू असंखदव्वाणि।। दव्व सं; गो.जी.५८९) एदाणि छ

अजीवद्रव्य है, जैसे शब्दादि। वह रूपी अजीवद्रव्य छह प्रकारका है, पृथिवी, जल, छाया, नेत्रको छोडकर शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्मस्कन्ध और परमाणु। कहा भी है--

जिनेन्द्रदेवने पृथिवी, जल, छाया, नेत्र इन्द्रियके अतिरिक्त शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्म और परमाणु, इसप्रकार पुद्‌गलद्रव्य छह प्रकारका कहा है।।२।।

विशेषार्थ --- ऊपर जो पुद्‌गलके छह भेद बतलाये हैं वे उपलक्षणमात्र हैं, इसलिये उपलक्षणसे उस उस जातिके पुद्‌गलोंका उस उस भेदमें ग्रहण हो जाता है। ग्रन्थान्तरोंमें जो पुद्‌गलके स्थूल-स्थूल, स्थूल, स्थूल-सूक्ष्म, सूक्ष्म-स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्म-सूक्ष्म ये छह भेद गिनाये हैं और उनका दृष्टान्तोंद्वारा स्पष्टीकरण करनेके लिये उपर्युक्त पृथिवी आदि छह प्रकार बतलाये हैं, इससे भी यही सिद्ध होता है कि ये पृथिवी आदि नाम उपलक्षणरूपसे लिये गये हैं।

अरूपी अजीवद्रव्य चार प्रकारका है, धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और कालद्रव्य। उनमेंसे धर्मद्रव्यका लक्षण कहते है। जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, जीव और पुद्‌गलोंके गमन और आगमनमें साधारण कारण है, असंख्यातप्रदेशी है और लोकाकाशके बराबर है वह धर्मद्रव्य है। इसीप्रकार अधर्मद्रव्य भी है,परंतु इतनी विशेषता है कि यह जीव और पुद्‌गलोंकी स्थितिमें साधारण कारण है। इसीप्रकार आकाशद्रव्य भी है, पर इतनी विशेषता है कि आकाशद्रव्य अनन्तप्रदेशी, सर्वगत और अवगाहन लक्षणवाला है। इसीप्रकार

दव्वाणि। एदेसु छसु दव्वेसु केण दव्वेण पगदं? जस्स संताणिओगद्दारे चोद्दसमग्गणट्ठाणेहि चोद्दसजीवसमासाणमत्थित्तं परूविदं जीवदव्वस्स तेण पगदं। तं कधं णव्वदि त्ति भणिदे 'मिच्छादिट्‌ठी केवडिया' इदि सेसदव्वाणं परिमाणमुज्झिदूण जीवदव्वपरिमाणपरूवयसुत्तादो जाणिज्जदि जीवदव्वेणेक्केण चेव पगदं, ण अण्णदव्वेहिं ति। प्रमीयन्ते अनेन अर्था इति प्रमाणम्। दव्वस्स पमाणं दव्वपमाणं। एवं तप्पुरिस-समासे कीरमाणे दव्वादो पमाणस्स भेदो ढुक्कदि, जहा देवदत्तस्स कंबलो त्ति। एत्थ देवदत्तादो। कंबलस्सेव भेदो ण, अभेदे वि उप्पलगंधो इच्चेवमादिसु तप्पुरिससमास-दंसणादो। अधवा दव्वादो पमाणं केण वि सरूवेण भिण्णं चेव, अण्णहा विसेसिय

कालद्रव्य भी है, पर इतनी विशेषता है कि कालद्रव्य अपने और दूसरे द्रव्योंके परिणमनमें साधारण कारण है, अप्रदेशी अर्थात् एकप्रदेशी है और लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही कालाणु हैं। इसप्रकार ये छह द्रव्य हैं।

शंका -- इन छह द्रव्योंमेंसे यहाँ प्रकृतमें किस द्रव्यसे प्रयोजन है, अर्थात् किस द्रव्यके द्वारा प्रकृत विषय कहा जायेगा?

समाधान -- सत्प्ररूपणानुयोगद्वारमें चौदहों मार्गणास्थानोंके द्वारा जिस जीवद्रव्यके चौदहों जीवसमासोंके अस्तित्वका निरूपण कर आये हैं, प्रकृतमें उसी जीवद्रव्यसे प्रयोजन है।

शंका -- यह कैसे जाना?

समाधान -- 'मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं' इसप्रकार शेष पांच द्रव्योंके परिमाणको छोड़कर एक जीवद्रव्यके परिमाणके निरूपण करनेवाले सूत्रसे यह जाना जाता है कि प्रकृतमें एक जीवद्रव्यसे ही प्रयोजन है, अन्य द्रव्योंसे नहीं।

जिसके द्वारा पदार्थ मापे जाते हैं या जाने जाते हैं उसे प्रमाण कहते है और द्रव्यके प्रमाणको द्रव्यप्रमाण कहते हैं।

शंका -- इस प्रकार 'द्रव्य प्रमाण' इन दोनों पदोंमे तत्पुरुष समास करने पर द्रव्यसे प्रमाण भेद प्राप्त होता है, जैसे 'देवदत्तका कम्बल' ?

समाधान -- देवदत्तसे कम्बलका जिस प्रकार भेद है, प्रकृतमें उस प्रकारका भेद नहीं हैं, क्योंकि, अभेदके रहने पर भी 'उत्पलगन्ध' इत्यादि पदोंमे तत्पुरूष समास देखा जाता है। इसका यह तात्पर्य है कि 'उत्पलगन्ध' इत्यादि पदोंमें 'उत्पलस्य गन्धःउत्पलगन्धः' इत्यादि रूपसे तत्पुरूष समासके रहने पर भी जिसप्रकार उत्पलसे गन्धका भेद नहीं होता हैं, उसी प्रकार यहाँ पर भी द्रव्यसे प्रमाणका सर्वथा भेद नहीं समझना चाहिये।

अथवा, द्रव्यसे प्रमाण किसी अपेक्षासे भिन्न ही है। यदि द्रव्यसे प्रमाणका कथंचित् भेद न माना जाय तो द्रव्य और प्रमाणमें विशेष्य-विशेषणभाव नहीं बन सकता है। अथवा,

----

विसेसणभावाणुणवत्तीदो। अथवा कम्मधारयसमासो कादव्वो दव्वमेव पमाणं दव्वपमाणमिदि। एत्थ वि ण दव्वपमाणाणमेयंतेण एगत्तं, एकत्थ समासाभावादो। अधवा दुंदसमासो कादव्वो। तं जधा दव्वं च पमाणं च दव्वपमाणमिदि। दुंदसमासो अवयवपहाणो त्ति दव्व-पमाणाणं पुध पुध परूवणं पावेदि। ण च सुत्ते पुध पुध दव्वपमाणाणं परूवणा कदा। जदि वि समुदयपहाणो दुंदसमासो आसइज्जदि तो वि अवयववदिरित्तसमुदायाभावादो अवयवाणं चेव परूवणा पावेदि। ण च सुत्ते अवयवाणं समूहस्स वा परूवणा कदा। तदो ण दुंदसमासो कीरदि त्ति? ण एस दोसो, दव्वस्स पमाणे परूविदे दव्वं पि परूविदमेव। कुदो? दव्ववदिरित्तपमाणाभावादो। तिकालगोयराणंतपज्जयाणमण्णोण्णाजहवुत्ती दव्वं। वुत्तं च--

नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुच्चयः।
अविभ्राड्भावसम्बन्धो द्रव्यमेकमनेकधा१ (आ. मी. १०७) ।।३।।

संखाणं दव्वस्सेको पज्जाओ,तदो ण दोण्हमेगत्तमिदि। वुत्तं च--

द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमे 'दव्वमेव पमाणं दव्वपमाणं' अर्थात् द्रव्य ही प्रमाण द्रव्यप्रमाण है, इस प्रकार कर्मधारय समास करना चाहिए। यहाँ पर भी द्रव्य और प्रमाण इन दोनोंमे एकान्तसे एकत्व अर्थात् अभेद नहीं है, क्योंकि, सर्वथा एकार्थमें अर्थात् अभेदमें समास ही नहीं हो सकता है। अथवा,द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्वन्द्वसमास करना चाहिये। वह इसप्रकार है, द्रव्य और प्रमाण द्रव्यप्रमाण।

शंका -- द्वन्द्वसमास अवयवप्रधान होता है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक् प्ररूपण प्राप्त हो जाता है। परंतु सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक् कथन नहीं किया है। यद्यपि समुदायप्रधान भी द्वन्द्वसमास हो सकता है, तो भी अवयवोंको छोड़कर समुदाय पाया नहीं

जाता है, इसलिये समुदायप्रधान द्वन्द्वसमासके करने पर भी अवयवोंकी ही प्ररूपणा प्राप्त होती है। परंतु सूत्रमें अवयवोंकी अथवा समूहकी प्ररूपणा नहीं की गई हैं। इसलिये द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्वन्द्वसमास नहीं किया जा सकता हैं?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर द्रव्यका भी प्ररूपण हो ही जाता है, क्योंकि द्रव्यको छोड़कर उसका प्रमाण नहीं पाया जाता है ।

त्रिकालगोचर अनन्त पर्यायोंकी परस्पर अपृथग्वृत्ति द्रव्य है। कहा भी है---

जो नैगमादि नय और उनकी शाखा उपशाखारूप उपनयोंके विषयभूत त्रिकालवर्ती पर्यायोंका अभिन्न सबन्धरूप समुदाय है उसे द्रव्य कहते हैं। वह द्रव्य कथंचित् एकरूप और कथंचित् अनेकरूप है।।३।।

द्रव्यकी एक पर्याय संख्यान है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणमें एकत्व अर्थात् सर्वथा अभेद नहीं है। कहा भी है--

----

एयदवियम्मि जे अत्थपज्जया वयणपज्जया चावि।।

तीदाणागदभूदा तावदियं तं हवदि दव्वं१ (गो.जी.५८२.स.त.१.३३.)।।४।।

एवं ताणं भेदो भवदु णाम, किंतु दव्वगुणपरूवणादारेणेव दव्वस्स परूवणा भवदि, अण्णहा दव्वपरू वणोवायाभावादो। उत्तं च--

नानात्मतामप्रजहत्तदेकमेकात्मताप्रजहच्च नाना।

अंगांगिभावात्तव वस्तु यत्तत् वस्तू क्रमेण वाग्वाच्यमनन्तरूपम्२ (युक्त्यनु.५०)।।५।।

तदो दव्वगुणे पमाणें परूविदे दव्वं परूविदं चेव। एवं सुत्ते दव्वपमाणा परूवणा अत्थि त्ति दुंदसमासो वि ण विरू ज्झदे। सेससमासाणमेत्थ संभवो णत्थि। ते सव्वे वि समासा केत्तिया? छच्चेव भवंति। उत्तं च--

बहुव्रीह्यव्ययीभावौ द्वन्द्वस्तत्पुरूषो द्विगु:।

कर्मधारय इत्येते समासा:षट् प्रकीर्तिता: ।।६।।

किमिदि इदरेसिं संभवो णत्थि? एत्था तदत्थाभावादो। को तेसिमत्थो?

एक द्रव्यमें अतीत, अनागत और 'अपि' शब्दसे वर्तमान पर्यायरूप जितने अर्थपर्याय और व्यंजनपर्याय हैं तत्प्रमाण वह द्रव्य होता है ।।४।।

यद्यपि इसप्रकार द्रव्य और प्रमाणमें भेद रहा आवे, फिर भी द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके द्वारा ही द्रव्यकी प्ररूपणा हो सकती हैं , क्योंकि, द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके विना द्रव्यप्ररूपणाका कोई उपाय नहीं हैं। कहा भी है--

अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नानास्वरूपताको न छोड़ता हुआ वह द्रव्य एक और अन्वयरूपसे एकपनेको नहीं छोड़ता हुआ वह अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नाना है। इसप्रकार अनन्तरूप जो वस्तु है वही, हे जिन, आपके मतमें क्रमश: अंगांगीभावसे वचनों द्वारा कही जाती है।।५।।

अत:द्रव्यके गुणरूप प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर द्रव्यका कथन हो ही जाता है। इसप्रकार सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणकी प्ररूपणा है ही, अतएव द्वन्द्वसमास भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है। इसप्रकार तत्पुरूष, कर्मधारय और द्वन्द्वसमासको छोड़कर शेष समासोंकी यहाँ संभावना नहीं है।

शंका -- वे संपूर्ण समास कितने हैं?

समाधान -- वे समास छह ही हैं। कहा भी है--

बहुव्रीहि, अव्ययीभाव, द्वन्द्व, तत्पुरूष, द्विगु और कर्मधारय इसप्रकार ये छह समास कहे गये हैं।।६।।

शंका -- यहाँ द्रव्यप्रमाण इस पदमें उपर्युक्त तीन समासोंको छोड़कर दूसरे समासोंकी संभावना क्यों नहीं हैं?

बहिरर्थो बहुव्रीहि: परं तत्पुरूषस्य च।
पूर्वमव्ययीभावस्य द्वन्द्वस्य तु पदे पदे।।७।।

संख्यापूर्वकस्तत्पुरूषो द्विगु: समास:, यथा पञ्चनदमित्यादि। एकाधिकरण: तत्पुरूष: कर्मधारय इति। एत्थ चोदगो भणदि-संखा एक्का चेव, एगवदिरित्त-दुवादीणतभावादो। सा च एक्कसंखा सव्वपयत्थाणमत्थि त्ति जाणिज्जदि, अण्णहा तेसिमत्थित्ताणुववत्तीदो? तदो किं तीए संखापरूवणाए इदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे- सयलपयत्थाणं जदि एक्का चेव संखा णियमेण भवदि तो सव्वपयत्थाणं एक्कादो अव्वदिरित्ताणं एगत्तं पसज्जेज्ज। तहा च एगट्ठदंसणे सयलट्ठदंसणं, एगट्ठविणासे सयलट्ठविणासो, यट्ठुप्पत्तीए सयलट्ठुप्पत्ती जाएज्ज। ण च एवं, तहा अदंसणादो। तम्हा पयत्थभेदो इच्छिदव्वो। संते तब्भेदे तत्थ ट्ठियसंखाए भेदो भवदि चेव, भिण्णट्ठट्ठियसंखाणाणमेगत्तविरोहादो। होदु एक्कसंखा चेव बहुवा, ण तदो

समाधान -- क्योंकि यहाँ पर उनका अर्थ घटित नहीं होता है, इसलिये अन्य समासोंका ग्रहण नहीं किया।

शंका -- उन छहों समासोंका क्या अर्थ है?

समाधान -- अन्य अर्थप्रधान बहुव्रीहि समास है। उत्तर पदार्थप्रधान तत्पुरूष समास है। अव्ययीभाव समासमें पूर्व पदार्थप्रधान है। द्वन्द्व समासकी प्रत्येक पदमें प्रधानता रहती है ।।७।।

संख्यापूर्वक तत्पुरूषको द्विगु समास कहते हैं, जैसे पंचनद इत्यादी। जहाँ पर दो पदार्थोंका एक आधार दिखाया जाता है ऐसे तत्पुरूषको कर्मधारय समास कहते हैं।

शंका -- यहाँ पर शंकाकार कहता है कि संख्या एकरूपही है, क्योंकि एकको छोड़कर दो आदिक संख्याएं नहीं पाई जाती हैं । और वह एकरूप संख्या संपूर्ण पदार्थोंमें रहती है ऐसा जाना जाता है। यदि ऐसा न माना जाय तो उन संपूर्ण पदार्थोंका अस्तित्व ही नहीं बन सकता है, इसलिये यहाँ पर उस संख्याकी प्ररूपणासे क्या प्रयोजन है।

समाधान -- आगे उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं। संपूर्ण पदार्थोंके नियमसे एक ही संख्या होती है, यदि ऐसा मान लिया जाय तो वे संपूर्ण पदार्थ एकरूप संख्यासे अभिन्न हो जाते हैं, इसलिये उन सबको एकत्वका प्रसंग आ जाता है। और ऐसा मान लेने पर एक पदार्थका ज्ञान होने पर संपूर्ण पदार्थोंका ज्ञान, एक पदार्थके विनाश होने पर संपूर्ण पदार्थोंका विनाश और एक पदार्थकी उत्पत्ति होनेपर संपूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होने लगेगी। परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा देखा नहीं जाता है, इसलिये पदार्थोंमें भेद मान लेना चाहिये। इसप्रकार पदार्थोंमें भेदके सिद्ध हो जाने पर उनमें रहनेवाली संख्यामें भेद सिद्ध हो ही जाता है, क्योंकि, अनेक पदार्थोंमें रहनेवाली संख्याओंमें एकत्व अर्थात् अभेद माननेमें विरोध आता है।

अण्णा संखा चे? ण, एकिस्से बहुत्त-विरोधादो। एगत्तं पडि समाणत्तणेण एगत्त मावण्णाए दव्व-खेत्त-काल-भावभेदेण णाणत्तमुवगदाए एक्कसंखाए ण बहुत्तं विरू ज्झदे चे? जदि एवं तो एगसंखादो कथंचि भेदा दुवादिसंखाए भेदो किमिदि ण इच्छिज्जदे। कहं भेदो चे, दव्वादिभेदं पडुच्च तदो चेव दुब्भावो, एगत्तणेण दोण्हं समाणत्तदंसणादो। दोण्हमेगत्तं दव्वट्ठियणयविवक्खादो। पज्जवट्ठियणये विवक्खिदे एक्कसंखादो सेसेक्कसंखा वदिरित्तेत्ति णाणत्तं। णेगमणए विवक्खिदे दुवादिभावो। एत्थ पुण णेगमणयविवक्खादो संखाभेदो गहेदव्वो। यथावस्त्ववबोधः अनुगमः, केवलिश्रुतकेवलिभिरनुगतानुरू पेणावगमो वा। द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्यप्रमाणयोर्वा अनुगमः द्रव्य प्रमाणानुगमः, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया। दुविहो णिद्देसो, सोदाराणं

शंका -- एक यह संख्या ही अनेक रूप हो जाओ, परंतु उससे भिन्न संख्या नहीं पाई जाती है?

समाधान -- ऐसा नहीं है,क्योंकि, एक संख्याको बहुतरूप माननेमें विरोध आता है।

शंका -- एक यह संख्या एकत्वके प्रति समान होनेसे एकरूप है और द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावके भेदसे नानारूप है, इसीलिये एक संख्यामें बहुत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है?

प्रतिशंका -- यदि ऐसा है तो एक संख्यासे कथंचित् भिन्न होनेके कारण दो आदि संख्याओंका उससे भेद क्यों नहीं मान लेते हो?

शंका -- एक संख्यासे दो आदि संख्याओंका भेद कैसे है?

समाधान -- द्रव्य, क्षेत्र आदि भेदोंकी अपेक्षासे दो आदि संख्याओंका भेद है और इसीलिये संख्याओंमे दो आदि रूपता बन जाती है, क्योंकि, एकपनेकी अपेक्षा दोनोंमें समानता देखी जाती है।

द्रव्यार्थिकनयकी विवक्षासे एक और नाना इन दोनोंमें एकत्व है। पर्यायार्थिकनयकी विवक्षा होने पर विवक्षित एक संख्यासे शेष एक संख्याएं भिन्न हैं, इसलिये उनमें नानात्व है। तथा नैगमनयकी विवक्षा होने पर द्वित्व आदि भाव बन जाता है। इसप्रकार (संख्याके कथंचित् एकरूप और कथंचित् नानारूप सिद्ध हो जाने पर उनमेंसे) यहाँ प्रकृतमें तो नैगमनयकी विवक्षासे संख्याभेद ही ग्रहण करना चाहिये।

वस्तुके अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते है। अथवा, केवली और श्रुतकेवलियोंकें द्वारा परंपरासे आये हुए अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं। द्रव्यगत प्रमाणके अथवा द्रव्य और प्रमाणके

अनुगमको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं। उससे अर्थात् द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा, इसप्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम पक्षके साथ सूत्रमें जो तृतीया विभक्ति जोडी है वह निमित्तरूप अर्थमें जानना चाहिए।

जहा णिच्छयो होदि तहा देसो णिद्देसो। अथवा 'णि:' इति अतिशये वर्तते, कुतीर्थपाखण्डिन: अतिशय्य कथनं वा निर्देश:। स द्विविध: द्विप्रकार: शरीरस्वभावरूप प्रकृतिशीलधर्माणां निर्देश इव। ओघेण, ओघं वृन्दं समूह: संघात: समुदय: पिण्ड: अविशेष: अभिन्न: सामान्यमिति पर्यायशब्दा:। गत्यादिमार्गणस्थानैरविशेषितानां चतुर्दशगुणस्थानानां प्रमाणप्ररूपणमोघनिर्देश:। चतुर्दशगुणस्थानविशिष्टसकलजीवराशिप्ररूपणादादेश: किं न स्यादिति चेन्न, सर्वजीवराशिनिरूपणं प्रति प्रतिज्ञाभावात्। क्व प्रतिज्ञास्याचार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा। सा कुतोऽवसीयत इति चेत्, 'एत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इत्यादिसूत्रादवसीयते।

निर्देश दो प्रकारका है। जिस प्रकारके कथन करनेसे श्रोताओंको पदार्थके विषयमें निश्चय होता है उस प्रकारके कथन करनेको निर्देश कहते हैं। अथवा 'नि' का अर्थ अतिशय है, इससे निर्देश पदका यह अर्थ होता है कि कुतीर्थ अर्थात् सर्वथा एकान्तवादके प्रस्थापक पाखण्डियोंको उल्लंघन करके अतिशयरूप कथन करनेको निर्देश कहते हैं। वह निर्देश शरीरके स्वभाव, रूप, प्रकृति, शील और धर्मके निर्देशके समान दो प्रकारका है। उनमेंसे एक ओघनिर्देश है। ओघ, वृन्द, समूह, संघात, समुदय, पिण्ड, अविशेष, अभिन्न और सामान्य ये सब पर्यायवाची शब्द हैं। इस ओघनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार हुआ कि गत्यादि मार्गणास्थानोंसे विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण करना ओघनिर्देश है।

शंका -- वह ओघनिर्देश चौदहों गुणस्थानविशिष्ट संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाला होनेसे आदेश निर्देश क्यों नही कहलाता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके निरूपणकी प्रतिज्ञा नहीं की गई है।

शंका -- तो फिर आचार्यने ओघनिर्देशकी किस विषयमें प्रतिज्ञा की है?

समाधान -- आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके (गुणस्थानोंके) प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है।

शंका -- आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- 'एत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इत्यादि सूत्रसे जाना जाता है कि ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके विषयमें आचार्यकी प्रतिज्ञा है।

शंका -- संपूर्ण जीवराशीको छोडकर चौदह गुणस्थान पाये नहीं जाते हैं, इसलिये चौदह गुणस्थानोंके निरूपण करने पर भी तो संपूर्ण जीवराशिका ही निरूपण हो जाता है?

समाधान -- नहीं क्योंकि ओघनिर्देशके निरूपणमें समस्त जीवसमुदाय अविवक्षित है।

छ. २

सर्वजीवराशिव्यतिरिक्तचतुर्दशगुणस्थानानामभावात्तथापि सर्वजीवराशिरेव निरूपितं स्यादिति चेत्? न, जीवसमुदायस्याविवक्षितत्वात्। आदेसेण, आदेश: पृथग्भाव: पृथक्करणं विभजनं विभक्तीकरणमित्यादय: पर्यायशब्दा:। गत्यादिविभिन्नचतुर्दशजीवसमासप्ररूपणमादेश:। घ्जहा उद्देसो तहा णिद्देसो। इदि कट्टु आदेसं थप्पं काऊण ओघपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

ओघेण मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता१ (सामान्येन तावत् जीवा मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः। स. सि. ८. मिच्छाइट्ठी पावाणंताणंता।। गो. जी. ६२३. मिच्छाणंता। पञ्चसं. २, ९.) ।।२।।

ओघसद्दुच्चारणाभावे ओघादेसपरूवणासु कदमेसा परूवणेत्ति सोदारस्स चित्तं मा घुलिस्सदि त्ति तच्चित्तस्स थिरत्तुप्पायणट्ठं ओघेणेत्ति भणिदं। मिच्छादिट्ठिग्गहणाभावे कदमस्स जीवसमासस्स इमा पमाणपरूवणा इदि सोदारस्स संदेहो होज्ज, तस्स संदेहुप्पत्तिणिवारणट्ठं मिच्छादिट्ठिग्गहणं कदं। दव्वपमाणेणेत्ति अभणिय केवडिया इदि सामण्णेण पुच्छिदे इमा पुच्छा किं दव्वविसया, किं खेत्तविसया, किं

विशेषार्थ -- यद्यपि गुणस्थानोंमें संपूर्ण जीवराशिका अन्तर्भाव हो जाता है, फिर भी एक जीवके भी एक पर्यायमें संपूर्ण गुणस्थान संभव हैं, इसलिये यह कह गया है कि ओघनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके कथन करनेकी विवक्षा नहीं की गई है।

आदेशसे कथन करनेको आदेशनिर्देश कहते हैं। आदेश, पृथग्भाव, पृथक्करण, विभजन, विभक्तीकरण इत्यादिक पर्यायवाची शब्द हैं। आदेशनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार है कि गति आदि मार्गणाओंके भेदोंसे भेदको प्राप्त हुए चौदह गुणस्थानोंका प्ररूपण करना आदेशनिर्देश है।

'उद्देशके अनुसार निर्देश करना चाहिये' ऐसा समझकर आदेशको स्थगित करके पहले ओघनिर्देशका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं--

ओघसे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है, अनन्त है ।।२।।

ओघ शब्दके उच्चारण नहीं करने पर ओघ और आदेश प्ररूपणाओंमेंसे 'यह कौनसी प्ररूपणा है' इसप्रकार श्रोताका चित्त मत घुले, इसलिये उसके चित्तकी स्थिरता उत्पन्न करनेके लिये सूत्रमें 'ओघसे' यह पद कहा है। सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदके ग्रहण नहीं करने पर कौनसे जीवसमासकी यह प्रमाण प्ररूपणा है इसप्रकार श्रोताको संदेह हो सकता है, इसलिये उसकी

सन्देहोत्पत्तिके निवारण करनेके लिये सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका ग्रहण किया है। सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाणसे' इस पदको न कहकर 'कितने हैं' इसप्रकार सामान्यसे पूछने पर यह पृच्छा क्या द्रव्यविषयक है, क्या क्षेत्रविषयक है, क्या कालविषयक है, अथवा क्या भावविषयक है,

----

कालविसया, किं वा भावविसया, इदि संदेहो होज्ज; तण्णिवारणट्ठं दव्वपमाणग्गहणं कदं। केवडिया इदि पुच्छा । पुच्छामंतरेण 'ओघेण मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण अणंता' इदि किण्ण वुच्चदे? न, अस्य स्वकर्तृत्वनिराकरणद्वारेणाप्तकर्तृत्वप्रतिपादन-फलत्वात्। तदपि किं फलमिति चेत्? 'वक्तृप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात् वचनस्यास्य प्रामाण्यप्रदर्शनफलम्। भूतबल्यादीनामाचार्याणां क्व व्यापार इति चेत्१ (टीप- १ मुद्रितपाठ - चेन्न.) ? तेषां व्याख्यातृत्वाभ्युपगमात्। अणंता इदि पमाणं वुत्तं, एवं वुत्ते संखेज्जा-संखेज्जाणं पडिणियत्ती । तं च अणंतमणेयविहं। तं जहा--

णामं ठवणा दवियं सस्सद गणणापदेसियमणंतं ।

एगो उभयादेसो वित्थारो सव्व भावो य ।।८।।

इस प्रकारका सन्देह हो सकता है। अत: उस सन्देहके निवारणार्थ सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाण' पदको ग्रहण किया है। 'कितने हैं' यह पद प्रश्नरूप है।

शंका -- 'कितने हैं' इस प्रकारके प्रश्नके विना ही 'ओघनिर्देशसे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त हैं' इसप्रकारका सूत्र क्यों नहीं कहा?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तके कर्तृत्वका प्रतिपादन करना 'कितने हैं' इस पदके सूत्रमें देनेका फल है।

शंका -- अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्त कर्तृत्वके प्रतिपादन करनेका भी क्या फल है?

समाधान -- 'वक्ताकी प्रमाणतासे वचनोंमें प्रमाणता आती है' इस न्यायके अनुसार 'अनन्त हैं' इस वचनकी प्रमाणता दिखाना इसका फल है।

शंका -- जब कि 'ओघेण मिच्छाइट्ठी' इत्यादी वचनके कर्ता आप्त सिद्ध हो जाते हैं तो फिर भूतबलि आदि आचार्योंका व्यापार कहां पर होता है?

समाधान -- उनको आप्तके वचनोंका व्याख्याता स्वीकार किया है, इसलिये आप्तके वचनोंके व्याख्यान करनेमें उनका व्यापार होता है।

सूत्रमें दिये गये 'अणंता' इस पदके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कहा गया है। मिथ्यादृष्टि जीव अनन्त हैं, इस प्रकार कथन करने पर संख्यात और असंख्यातकी निवृत्ति हो जाती हैं। वह अनन्त अनेक प्रकारका हैं, जो इसप्रकार हैं--

नामानन्त, स्थापनानन्त, द्रव्यानन्त, शाश्वतानन्त, गणनानन्त, अप्रदेशिकानन्त, एकानन्त, उभयानन्त, विस्तारानन्त, सर्वानन्त और भावानन्त इस प्रकार अनन्तके ग्यारह भेद हैं ।।८।।

तत्थ णामाणंतं जीवाजीवमिस्सदव्वस्स कारणणिरवेक्खा सण्णा अणंता इदि। जं तं ट्ठवणाणंतं णाम तं कट्ठकम्मेसु१ (सीवणिखइरसोगकट्ठादिसु x x जहासरू वेण घडियट्ठवणा x x चित्तारेहिंतो वण्णविसेसेहिं णिप्फण्णाणि चित्तकम्माणि णाम। वत्थेसु पाणसालियकसद्दादीहिं जाणिदूण किरियाए णिप्पाइत्ताणि रूवाणि छिंपएहि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम। लेप्पयारेहि लेविऊण जाणि णिप्पाइदाणि रूवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम। एत्थ रट्टट्टएहि जाणि पव्वदेसु घडिदाणि रूवाणि ताणि लेणकम्माणि णाम। वड्ढइपिंडेण पासादेसु घडिदरूवाणि गिहकम्माणि णाम। तेण चेव कुड्डेसु घडिदरूवाणि मित्तिकम्माणि णाम। दंतिदंतादिसु घडिदरूवाणि दंतकम्माणि णाम। भिंडेहि घडिदरूवाणि भिंडकम्माणि णाम। धवला १२०९.) वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे च अण्णे ट्ठवणाए ट्ठविदा अणंतमिदि तं सव्वं ट्ठवणाणंतं णाम। जं तं दव्वाणंतं तं दुविहं आगमदो

णोआगमदो य। आगमो गंथो सुदणाणं सिद्धंतो पवयणमिदि एगट्ठो। अत्रोपयोगिनः श्लोकाः--

पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसंहतेः।

द्योतकः सर्वभावानामाप्तव्याहृतिरागमः ।।९।।

आगमो ह्याप्तवचनमाप्तं दोषक्षयं विदुः।

त्यक्तदोषोऽनृतं वाक्यं न ब्रूयाद्धेत्वसंभवात्२ (अनु. पत्र १६४. टीका.) ।।१०।।

उनमेंसे कारणके विना ही जीव, अजीव और मिश्र द्रव्यकी अनन्त ऐसी संज्ञा करना नाम अनन्त है।

काष्ठकर्म, चित्रकर्म, पुस्तकर्म, लेप्यकर्म, लेनकर्म, शैलकर्म, भित्तिकर्म, गृहकर्म, भेंडकर्म अथवा दन्तकर्ममें अथवा अक्ष (पासा) हो या कौन्डी हो, अथवा दूसरी कोई वस्तु हो उसमें, यह अनन्त है, इस प्रकारकी स्थापना करना यह सब स्थापनानन्त है।

द्रव्यानन्त आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है। आगम, ग्रन्थ, श्रुतज्ञान, सिद्धान्त और प्रवचन ये एकार्थवाची शब्द हैं। इस विषयमें उपयोगी श्लोक हैं--

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको आगम कहते हैं ।।९।।

आप्तके वचनको आगम जानना चाहिये और जिसने जन्म, जरा आदि अठारह दोषोंका नाश कर दिया है उसे आप्त जानना चाहिये। इसप्रकार जो त्यक्तदोष होता है वह असत्यवचन नहीं बोलता है, क्योंकि, उसके असत्यवचन बोलनेका कोई कारण ही संभव नहीं है ।।१०।।

रागसे, द्वेषसे अथवा मोहसे असत्य वचन बोला जाता है, परंतु जिसके ये रागादि दोष नहीं रहते हैं उसके असत्य वचन बोलनेका कोई कारण भी नहीं पाया जाता है ।।११।।

रागाद्वा द्वेषाद्वा मोहाद्वा वाक्यमुच्यते ह्यनृतम्।

यस्य तु नैते दोषास्तस्यानृतकारणं नास्ति ।।११।।

तत्थ आगमदो दव्वाणंतं अणंतपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो। अवगम्य विस्मृतागमानां अवगमिष्यतां वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेत्? न, शक्तिरूपोपयोगस्य श्रुतावरणक्षयोपशमलक्षणस्य साम्प्रतं तत्रासत्त्वात्। आगमादण्णो णोआगमो। जं तं णोआगमदो दव्वाणंतं तं तिविहं, जाणुगसरीरदव्वाणंतं भविय-दव्वाणंतं तव्वदिरित्तदव्वाणंतं चेदि। तत्थ जाणुगसरीरदव्वाणंतं अणंतपाहुडजाणुगसरीरं तिकालजादं। कधं अणंतपाहुडादो आधारत्तणेण वदिरित्तस्स सरीरस्स अणंतववएसो? ण, असिसदं धावदि परसुसदं धावदि इच्चेवमादिसु तदो वदिरित्तस्स

अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले परंतु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीवको आगमद्रव्यानन्त कहते हैं।

शंका -- जिनको पहले आगमका ज्ञान था किंतु पश्चात विस्मृत हो गया है और जो आगमको भविष्यकालमें जानेंगे उन्हें भी द्रव्यागम यह संज्ञा क्यों न दी जाय?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, श्रुतज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम है लक्षण जिसका ऐसा शक्तिरूप उपयोग वर्तमानमें उन जीवोंके नहीं पाया जाता है, इसलिये उन्हें द्रव्यागम यह संज्ञा नहीं प्राप्त हो सकती है।

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं। वह नोआगम द्रव्यानन्त तीन प्रकारका है, ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त, भव्य नोआगमद्रव्यानन्त और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त। उनमेंसे अनन्तविषक शास्त्रको जानने वालेके तीनों कालोंमें होनेवाले शरीरको ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं।

शंका -- अनन्तविषयक शास्त्र अर्थात् अनन्तविषयक शास्त्रका ज्ञाता आधेय है और उसका शरीर आधार हैं, अतएव अनन्तविषयक शास्त्रके ज्ञातासे आधारतया शरीर भिन्न है, इसलिये उस शरीरको अनन्त यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, सौ तरवारें (सौ तरवारवाले) दौडती हैं, सौ फरसा (सौ फरसावाले) दौडते हैं इत्यादि प्रयोगोंमें तरवार और फरसासे भिन्न परंतु उनके आधारभूत

पुरुषोंमें भी जिस प्रकार आधेयरूप तरवार और फरसा यह संज्ञा देखी जाती है, उसी प्रकार प्रकृतमें भी आधारभूत शरीरमें आधेयका व्यवहार जान लेना चाहिये।

शंका -- वर्तमान कालमें आधारभूत शरीरमें आधेयका उपचार भले ही हो जाओ, परंतु अतीत और अनागत कालीन शरीरोंमें यह व्यवहार नहीं हो सकता है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसकी राजारूप पर्याय नष्ट हो गई है,

----

वि आधारपुरुसस्स आधेयववदेसदंसणादो। भवदु वट्टमाणम्हि आधारस्स आधेयोवयारो णादीदाणागदकालेसु त्ति? ण एस दोसो, णट्ठ-भविस्सरज्जम्हि वि पुरिसे राया आगच्छदि त्ति ववहारदंसणादो। पज्जयपज्जइणो भेदाभावादो ण तत्थ आधाराधेयभावो। अह जइ एत्थ वि आधाराधेयभावो होज्ज, जाणुगसरीरभवियाणं पुणरुत्तदा ढुक्केज्जेत्ति। जदि एवं, तो एदं परिहरिय धणुसदं भुंजदीदि एदं गहेयव्वं। न धनुर्धृतावस्थायामेवायं व्यवहार:, धनूंष्यपसार्य भुजानेष्वपि 'धनु:शतं भुंक्त' इति व्यवहारदर्शनात्। न घृतकुम्भदृष्टान्तो घटते, घटस्य घृतव्यपदेशानुपलम्भतो दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयो: साधर्म्याभावात्। जं तं भवियाणंतं तं अणंतप्पाहुडजाणुगभावी

अथवा जिसे भविष्यमें राजारूप पर्याय प्राप्त होगी, ऐसे पुरुषमें भी जिस प्रकार 'राजा आता है' यह व्यवहार देखा जाता है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

शंका -- पर्याय और पर्यायीमें भेद न होनेके कारण वहाँ पर आधार-आधेयभाव नहीं पाया जाता हैं । फिर भी यदि यहाँ भी आधार-आधेयभाव माना जावे; तो ज्ञायकशरीर और भावी इन दोनोंके कथनमें पुनरुक्तता प्राप्त हो जाएगी?

समाधान -- यदि ऐसा है तो इस दृष्टान्तको छोडकर 'सौ धनुष (सौ धनुषवाले) भोजन करते हैं' प्रकृतमें इस दृष्टान्तको लेना चाहिये। धनुषोंको धारण करनेरूप अवस्थामें ही 'सौ धनुष भोजन करते हैं' यह व्यवहार नहीं होता है किंतु धनुषोंको दूर करके भोजन करनेवालोंमें भी 'सौ धनुष भोजन करते हैं' इसप्रकार व्यवहार देखा जाता है। किन्तु यहाँ पर घृतकुम्भका

दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, घटमें घृत इसप्रकारका व्यवहार नहीं पाया जानेके कारण दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें साधर्म्य नहीं हैं।

विशेषार्थ -- नोआगमद्रव्यनिक्षेपके तीन भेद हैं- ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त। इनमेंसे ज्ञायकशरीरमें ज्ञाताका त्रिकालभावी शरीर लिया जाता है और भावीमें जो वर्तमानमें ज्ञाता नहीं है किंतु आगे होगा उसका ग्रहण किया जाता है। अब यदि जो पर्याय पहले हो चुकी है या आगे होगी उसे ही ज्ञायकशरीरका अतीत और भावी मान लें तो ज्ञायकशरीरभावी नोआगमद्रव्यमें और भावी नोआगमद्रव्यमें कोई अन्तर नहीं रह जाएगा। इसलिये ज्ञायकशरीरमें संबन्धप्राप्त भिन्न आधारमें आधेयका उपचार किया जाता है और भावीमें वही वस्तु आगे होनेवाली पर्यायरूपसे कही जाती है ऐसा समझना चाहिये । यद्यपि पहले आधारमें आधेयका उपचार दिखानेके लिये 'असिसदं धावदि' इत्यादि दृष्टान्त दे आये हैं, जिससे यह समझमें आ जाता है कि जिसप्रकार तरवारधारी सौ पुरुषोंके दौडनेपर 'सौ तरवारें दौडती है' इत्यादि रूपसे व्यवहार होता है उसीप्रकार अनन्त आदि विषयक शास्त्रके ज्ञाताके शरीरको भी नोआगमद्रव्यानन्त आदि कह सकते हैं। परंतु जो शरीर अभी प्राप्त नहीं हुआ है या प्राप्त होगा उसे कैसे नोआगमद्रव्यानन्त आदि कह सकते हैं, क्योंकि, उपचार संबद्ध पदार्थमें

जीवो। जं तं तव्वदिरित्तदव्वाणंतं तं दुविहं, कम्माणंतं णोकम्माणंतमिदि। जं तं कम्माणंतं तं कम्मस्स पदेसा। जं तं णोकम्माणंतं तं कडय-रुजगदीवसमुद्दादि एयपदेसादि पोग्गलदव्वं वा। आगममधिगम्य विस्मृत: क्वान्तर्भवतीति चेत्तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्ते। जं तं सस्सदाणंतं तं धम्मादिदव्वगयं। कुदो? सासयत्तेण दव्वाणं विणासाभावादो। जं तं गणणाणंतं तं बहुवण्णणीयं सुगमं च। जं तं अपदेसियाणंतं तं परमाणू । नोकर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यत्वं प्रत्यविशिष्टयो: शाश्वताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भाव: किमिति न स्यादिति चेत्? न, उच्यतेन तावच्छाश्वतानन्तं नोकर्मद्रव्यानन्तेऽन्त-र्भवति, तयोर्भेदात्। अन्तो विनाश:, न विद्यते अन्तो विनाशो यस्य तदनन्तम्। द्रव्यं शाश्वतमनन्तं शाश्वतानन्तम्। नोकर्म च

द्रव्यगतानन्यापेक्षया कटकादीनां वास्तवान्ताभावापेक्षया च अनन्तम्, ततो नानयोरेकत्वमिति। एकप्रदेशे परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरो द्वितीयः प्रदेशोऽन्तव्यपदेशभाक् नास्तीति परमाणुरप्रदेशानन्तः। तथा

होता है। इसका समाधान यह है कि जिस प्रकार धनुषोंको दूर रखकर भोजन करनेपर भी 'धणुसदं भुंजदि' यह व्यवहार बन जाता है, उसी प्रकार अतीत और अनागत शरीरकी अपेक्षा भी उपचारसे आधार-आधेयभाव मान कर नोआगमद्रव्यानन्त आदि संज्ञा बन जाती है। प्रकृतमें घृतकुम्भका दृष्टान्त इसलिये लागू नहीं होता है कि घटमें घी इस प्रकारका व्यवहार नहीं होनेसे वहाँ आधार-आधेयभावकी संभावना नहीं हैं।

जो जीव भविष्यकालमें अनन्तविषयक शास्त्रको जानेगा उसे भावी-नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यान्त दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त और नोकर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त। ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंके प्रदेशोंको कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं। कटक, रुचकवरद्वीप और समुद्रादि अथवा एक प्रदेशादि पुद्गलद्रव्य ये सब नोकर्मतद्व्यतिरिक्त-नोआगमद्रव्यानन्त हैं।

शंका -- जो आगमका अध्ययन करके भूल गया है उसका द्रव्यनिक्षेपके किस भेदमें अन्तर्भाव होता है ?

समाधान -- ऐसे जीवका तद्व्यतिरिक्त नोकर्म द्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव होता हैं ।

शाश्वतानन्त धर्मादि द्रव्योंमें रहता है, क्योंकि, धर्मादि द्रव्य शाश्वतिक होनेसे उनका कभी भी विनाश नहीं होता हैं।

जो गणनानन्त है वह बहुवर्णनीय और सुगम है । एक परमाणुको अप्रदेशिकानन्त कहते हैं ।

शंका -- द्रव्यत्वके प्रति अविशिष्ट ऐसे शाश्वतानन्त और अप्रदेशानन्तका नोकर्मद्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव क्यों नहीं हो जाता हैं?

च कथमयं नोकर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यगतानन्तसंख्यापेक्षया अनन्तव्यपदेशभाज्यन्तर्भवेत्। द्रव्यं प्रत्येकत्वं तत्रास्ति इति चेत्? अस्तु तथैकत्वं न पुनरन्येनान्येन प्रकारेणायातानन्त्यं प्रति। जं तं एयाणंतं तं लोगमज्झादो एगसेढिं पेक्खमाणे अंताभावादो एयाणंतं। ण दव्वाणंते दव्वभेदमस्सिऊण ट्ठिदे एदमणंतं पददि, एगदव्वस्सागासस्स पज्जवसाणदंसणाभावमस्सिऊण ट्ठिदत्तादो । जहा अपारो सागरो, अथाहं जलमिदि। जं तं उभयाणंतं तं तधा चेव उभयदिसाए पेक्खमाणे अंताभावादो उभयादेसाणंतं। जं तं वित्थाराणंतं तं पदरागारेण पेक्खमाणे अंताभावादो भवदि। जं तं सव्वाणंतं तं घणागारेण पेक्खमाणे अंताभावादो सव्वाणंतं भवदि। जं तं भावाणंतं तं दुविहंआगमदो णोआगमदो य। आगमदो भावाणंतं अणंतपाहुडजाणगो उवजुत्तो। जं तं णोआगमदो भावाणंतं तं तिकालजाद अणंतपज्जयपरिणदजीवादिदव्वं।

समाधान -- नहीं, क्योंकि, शाश्वतानन्तका नोकर्मद्रव्यानन्तमें तो अन्तर्भाव होता नहीं हैं, क्योंकि, इन दोनोंमें परस्पर भेद हैं। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं- अन्त विनाशको कहते हैं, जिसका अन्त अर्थात् विनाश नहीं होता हैं उसे अनन्त कहते हैं। द्रव्य शाश्वतानन्त है और नोकर्म द्रव्यगत अनन्तताकी अपेक्षा और कटकादिके वस्तुत: अन्तके अभावकी अपेक्षा अनन्त हैं, इसलिये इन दोनोंमें एकत्व नहीं हो सकता है। एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोडकर अन्त इस संज्ञाको प्राप्त होनेवाला दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है, इसलिये परमाणु अप्रदेशानन्त है। ऐसी स्थितिमें द्रव्यगत अनन्त संख्याकी अपेक्षा अनन्त संज्ञाको प्राप्त होनेवाले नोकर्मद्रव्यानन्तमें वह अप्रदेशानन्त कैसे अन्तर्भूत हो सकता है, अर्थात् नहीं हो सकता है, इसलिये अप्रदेशानन्त भी स्वतन्त्र है।

शंका -- द्रव्यके प्रति एकत्व तो उनमें पाया ही जाता है?

समाधान -- इन अनन्तोंमें यदि द्रव्यके प्रति एकत्व पाया जाता है तो रहा आवे, परंतु इतने मात्रसे इन अनन्तोंमें अन्य अन्य प्रकारसे आये हुए आनन्त्यके प्रति एकत्व नहीं हो सकता है।

लोकके मध्यसे आकाश-प्रदेशोंकी एक श्रेणीको देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे एकानन्त कहते हैं। द्रव्यभेदका आश्रय लेकर स्थित द्रव्यानन्तमें यह एकानन्त अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, यह एकानन्त एक आकाशद्रव्यका अन्त नहीं दिखाई देनेके कारण उसका आश्रय लेकर स्थित हैं, जैसे अपार समुद्र, अथाह जल इत्यादि। लोकके मध्यसे आकाश प्रदेशपंक्तिको दो दिशाओंमें देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे उभयानन्त कहते हैं। आकाशको प्रतररूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता हैं, इसलिये उसे विस्तारानन्त कहते हैं। आकाशको घनरूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता हैं, इसलिये उसे सर्वानन्त कहते हैं। आगम और नोआगमकी अपेक्षा भावानन्त दो प्रकारका है। अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे उपयुक्त जीवको आगमभावानन्त कहते है। त्रिकालजात अनन्त पर्यायोंसे परिणत जीवादि द्रव्य नोआगमभावानन्त हैं।

एदेसु अणंतेसु केण अणंतेण पयदं? गणणाणंतेण पयदं। तं कधं जाणिज्जदि? 'मिच्छाइट्ठी केवडिया' इदि सिस्सेण पुच्छिदे 'अणंता' इदि पमाणपरूवणादो जाणिज्जदि। ण च सेस-अणंताणि पमाणपरूवयाणि, तत्थ तधा अदंसणादो। जदि गणणाणंतेण पगदं तो सेस-दसविध-अणंतपरूवणं किमट्ठं कीरदे? वुच्चदे--

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परू वणाणिमित्तं च ।

संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च१ (सं. प. गा. १५,) ।।१२।।

उत्तं च पुव्वाइरिएहि--

जत्थ बहू जाणेज्जो अपरिमिदं तत्थ णिक्खिवे सूरी।

जत्थ बहुअं ण जाणइ चउत्थवो तत्थ णिक्खेवो२ (सं. प. गा. १४ (देखो पाठ भेद) छ. ३) ।।१३।।

अधवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं वण्णिज्जमाणं वत्तारस्सुप्पथोत्थाणं कुज्जा इदि णिक्खेवो कीरदे । तथा चोक्तम्--

----

शंका -- इन ग्यारह प्रकारकेअनन्तोंमेंसे प्रकृतमें किस अनन्तसे प्रयोजन है?

समाधान -- प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है।

शंका -- यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है?

समाधान -- 'मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं' इसप्रकार शिष्यके द्वारा पूछनेपर 'अनन्त हैं' इत्यादि रूपसे प्रमाणका प्ररूपण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है। इस गणनानन्तको छोडकर शेष अनन्त प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले नहीं हैं, क्योंकि, शेष अनन्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं देखा जाता है।

शंका -- यदि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है तो गणनानन्तको छोडकर शेष दश प्रकारके अनन्तोंका प्ररूपण यहाँ पर किसलिये किया है?

समाधान -- अप्रकृत विषयके निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयके प्ररू पण करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहाँ पर सभी अनन्तोंका कथन किया है ।।१२।।

पूर्वाचार्योंने भी कहा है--

जहाँ जीवादि पदार्थोंके विषयमें बहुत जानना चाहे, वहाँ पर आचार्य सभीका निक्षेप करे। तथा जहाँ पर बहुत न जाने, तो वहांपर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये ।।१३।।

अथवा निक्षेपके विना वर्णन किया गया यह विषय कदाचित् वक्ताको उन्मार्गमें ले जावे, इसलिये यहाँ पर सभी अनन्तोंका निक्षेप किया है। कहा भी है--

----

प्रमाण-नयनिक्षेपैर्योऽर्थो नामिसमीक्ष्यते ।

युक्तं चायुक्तवद् भाति तस्यायुक्तंच च युक्तवत् ।। १४।।

ज्ञानं प्रमाणमित्याहुरुपायो न्यास उच्यते ।